भारत में खाद्य सुरक्षा और चुनौती

सुमन कुमार प्रेमी
शोध छात्र
अर्थशास्त्र विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

सारांश

वर्तमान समय में दुनिया के सबसे अधिक लोग भारत में कुपोषित हैं। अधिकांश बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। 50 प्रतिशत से अधिक महिलाएँ खुन की कमी की शिकार हैं। ग्लोबल फुड सिक्योरिटी सूचकांक 2018 के अनुसार भारत का 113 देशों में 76वॉ स्थान है, तथा बहुत ही कम स्कोर 50.1 है। यह विकसित देशों से बहुत कम है। भारत के लिए खाद्य सुरक्षा आज भी एक चुनौती बना हुआ है। इसमें सुधार के लिए बहुत बड़ी पहल की आवश्यकता है जिससे भारत में कुपोषण की समस्या का समाधान हो सके एवं गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री उपलब्ध हो सके।

प्रस्तावना–

भोजन किसी भी देश के आवश्यकताओं में सबसे ऊँचा स्थान रखता है। यह जीवन की पहली शर्त है। पर्याप्त भोजन के बिना किसी भी राष्ट्र के लिए जीवन संभव नहीं है और समाज के प्रत्येक व्यक्ति को भोजन की समय पर आपूर्ति करना राष्ट्र का प्राथमिक कर्तव्य है। खाद्य आपूर्ति आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह जीवन के गारंटी और संतुलित क्षेत्रीय विकास से जुड़ा है। अपर्याप्त खाद्य सुरक्षा की चरम स्थिति मौत है। खाद्य सुरक्षा की अपर्याप्तता का खतरा आम तौर पर कुपोषण के रूप में प्रदर्शित होता है। खाद्य सुरक्षा की अवधारणा कुल जनसंख्या के लिए खाद्यान्नों की न्यूनतम मात्रा उपलब्ध कराने के

रूप में की जाती है। विश्व विकास रिपोर्ट (1986) के अनुसार ''सभी व्यक्तियों के लिए प्रत्येक समय पर एक सक्रिय स्वस्थ जीवन के लिए पर्याप्त भोजन की उपलब्धि होनी चाहिए''

भारत में खाद्यान्न उत्पादन के बढ़ने के बाद भी भारत में खाद्य समस्या बनी हुई है। जनसंख्या की तीव्र वृद्धि, खाद्यान्न की कीमतों में वृद्धि, प्राकृतिक आपदाएँ, निर्धनता, भोजन की बर्बादी तथा अन्य कारणो से भारत में खाद्य समस्या चुनौतिपूर्ण बना हुआ है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारत में खाद्य सुरक्षा के वर्तमान स्थिति का पता लगाना।

खाद्य सुरक्षा की अवस्थाएँः–

एक विकासशील अर्थव्यवस्था में खाद्य सुरक्षा की अवधारणा एक गत्यात्मक अवधारणा होती है क्योंकि समाज द्वारा प्राप्त विकास की अवस्था में परिवर्तन के साथ खाद्य सुरक्षा की अवधारणा में भी परिवर्तन होता जाता है अर्थात् जैसे–जैसे समाज का विकास होता जाता है, उसके अनुरूप खाद्य सुरक्षा की अवधारणा भी वृद्धि होती जाती है।

इस दृष्टि से खाद्य सुरक्षा की निम्नलिखित चार अवस्थाएं हैंः–

(i) प्रथम अवस्था : इस अवस्था में मानवीय जीवन को बनाए रखने के लिए सभी को अनाज के रूप में न्यूनतम मात्रा उपलब्ध होनी चाहिए।

(ii) द्वितीय अवस्था : इस अवस्था में खाद्य सुरक्षा के रूप में अनाजों के साथ–साथ दालों की भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता होनी चाहिए।

(iii) तीसरी अवस्था : इस अवस्था में खाद्य सुरक्षा में अनाजों और दालों के साथ–साथ दूध व दूध उत्पाद को भी सम्मिलित किया जाता है।

(iv) चतुर्थ अवस्था : यह अवस्था विकसित देश की अवस्था है जब खाद्य सुरक्षा में अनाजों, दालों, दूध एवं दूध के पदार्थों के साथ–साथ सब्जियों, फलों और अंडे, मछली व माँस आदि को भी सम्मिलित किया जाता है।

खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से अधिकांश अर्द्धविकसित देश, द्वितीय व तृतीय अवस्था में है। अतः जब एक नागरिकों को गुणवत्ता तथा उचित परिमाण में पोषण युक्त खाद्य सामग्री उपलब्ध नहीं होगी, वे आर्थिक विकास में सक्रिय भूमिका नहीं निभा पायेंगे।

भारत में खाद्य समस्या

भारत जैसे विकासशील देशों में ऐसे लोगों की संख्या बहुत अधिक है, जिन्हें पर्याप्त भोजन नहीं मिल पाता है। यही नहीं जो भोजन उन्हें मिलता है उसमें भी पोषक तत्वों की बहुत कमी होती है खाद्यान्न की यह समस्या गरीबों के लिए बहुत गंभीर बनी हुई है। बहुत लंबे समय से भारत में खाद्य समस्या गरीबों की समस्या रही है और आज भी इसका यही स्वरूप है। खाद्य–सामग्री की अपर्याप्तता, गरीबों के पास क्रय–शक्ति की कमी तथा अन्य अनेक कारणों के फलस्वरूप यह समस्या उलझती रही।

खाद्य समस्या के स्वरूपः–

इस समस्या को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता हैः–

(i) मात्रागत पहलू

(ii) कोटिगत पहलू

(iii) गरीबों की गरीबी

(i) मात्रागत पहलू : इस पहलू का सीधा संबंध अनाज की आपूर्ति के साथ है। खाद्य–सामग्री का उपलब्ध परिमाण प्रायः उस परिमाण से कम रहा है, जितना लोगों में कैलोरी की निम्नतम आवश्यक मात्रा पहुँचाने के लिए जरूरी है। खाद्य तथा कृषि संगठन ने प्रतिदिन के हिसाब से अनाज की प्रति व्यक्ति आवश्यकता 440 ग्राम आंकी है।

(ii) कोटिगत कमी : अधिकतर भारतवासी जो भोजन करते हैं उसमें पोषक तत्वों की बढ़ी कमी रहती है। भारतीय भोजन में किसी न किसी तत्व का अभाव बना रहता है। इस कारण हमारे श्रमिक वर्ग की कार्यकुशलता पर भी बुरा असर पड़ता है।

(iii) निर्धन वर्ग के पास क्रय शक्ति का अभाव : समग्र रूप से खाद्य पदार्थों की कमी के अतिरिक्त, इस संबंध में निर्धन वर्ग की स्थिति तो विशेष रूप से बहुत बुरी है। इस वर्ग में आयगत असमानता बहुत अधिक है। बहुत से लोग बेरोजगार हैं या फिर अल्प–नियोजित हैं इसलिए इस वर्ग में अनाज और पोषक आहार दोनों का विशेष अभाव पाया जाता है।

इस प्रकार खाद्य समस्या के तीन पहलू हैं। एक तो यह है कि हमारे यहाँ अभी हाल तक अनाज की कमी रही है जो अधिकतर भारतीयों का मुख्य भोजन है। दूसरा यह है कि यहाँ आहार असंतुलित है। अनेक लोगों के आहार में पोषक तत्वों की कमी होती है, गरीबों के भोजन में तो इस तरह के पदार्थ मानो है ही नहीं। तीसरी समस्या यह है कि बहुत से लोग क्रयशक्ति के अभाव में निम्नतम मात्रा में भी अनाज या पोषक आहार प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं। ऐसी स्थिति में लाखों लोगों का जीवन दुःखमय होना स्वाभाविक है।

वर्तमान समय में भारत में दुनिया के सबसे अधिक लोग लगभग 195 मिलियन कुपोषित है। विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार भारत में अनाज के पैदावार 2992 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होने का अनुमान है जबकि विकसित देशों जैसे उत्तरी अमेरिका में यह 7318.4 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। Food and Agriculture Organization (FAO), 2018 के रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 5 वर्ष से कम आयु के 38.4 प्रतिशत बच्चों का वजन उम्र के आधार पर कम है तथा 21 प्रतिशत बच्चों का वजन उसकी ऊँचाई के अनुसार बहुत कम है। साथ ही साथ 15 से 49 वर्ष की प्रजनन आयु की 51.4 प्रतिशत महिलाएँ खुन की कमी की शिकार हैं।

Global Food Security Index (GFSI), 2018 द्वारा आकलन किए गए 113 देशों में भारत 76वें स्थान पर है जो चार मापदंडो– सामर्थ्य, उपलब्धता, गुणवत्ता और सुरक्षा पर आधारित है। इसमें भारत का स्कोर 50.1 रहा जो अन्य विकसित देशों से बहुत कम है। सिंगापुर, आयरलैंड, यूनाइटेड किंगडम, यूनाइटेड स्टेट का स्कोर क्रमशः 85.9, 85.5, 85.0, 85.0 रहा। भारत के पड़ोसी मूल्क चीन का यह स्कोर 65.1 के साथ 46वें स्थान पर रहा।

यदि पिछले 7 वर्षों के स्कोर को देखा जाय तो भारत का यह ट्रेंड घटने का ही रहा है।

तालिका

Year	Overall Score				
	India	Singapore	Ireland	United Kingdom	United State
2012	51.6	83.2	82.6	79.1	85.6
2013	50.6	83.2	82.1	79.4	85.2
2014	50.3	84.3	82.7	79.9	85.5
2015	51.5	84.4	83.9	80.7	84.6

2016	52.0	85.4	87.1	84.3	85.5
2017	50.9	85.0	86.7	84.4	84.9
2018	50.1	85.9	85.5	85.0	85.0

स्त्रोत : Global food security Index 2018

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि भारत का स्कोर अन्य विकसित देशों की तुलना में बहुत कम है साथ ही साथ इसमें नकारात्मक कमी देखने को मिल रहा है।

खाद्य समस्या के कारणः–

भारत में जिस दर से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, उस दर से खाद्यान्न उत्पादन नहीं बढ़ पा रहा है। पिछले 50 वर्षों में जनसंख्या में 284 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि खाद्यान्नों की उत्पादन पिछले 50 वर्षों में मात्र 180 प्रतिशत की दर से बढ़ी है। भारत में प्रतिवर्ष लगभग 1 करोड़ 84 लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष बढ़ रहे हैं, जबकि खाद्यान्न मात्र 1 करोड़ 35 लाख व्यक्तियों के लिए ही बढ़ रहे हैं।

कीमतों में वृद्धि से खाद्य समस्या उत्पन्न होती है। प्राकृतिक आपदाओं में प्रतिकूल मौसम का होना शामिल है जिसमें वर्षा का ना होना, बाढ़, सूखा, भूकम्प, ओला–वृष्टि आदि प्रमुख हैं। इन कारणों से भी खाद्य–समस्या कभी–कभी उत्पन्न हो जाती है।

भारत की जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग गरीबी रेखा के नीचे अपना जीवन यापन गुजर बसर कर रही है। अतः प्रति व्यक्ति औसत आय बहुत ही कम होने के कारण भी उत्पादन समस्या बनी हुई है।

भारत में जितना अनाज का उत्पादन होता है इसका 1/3 भाग बर्बाद हो जाता है। अगर ये बर्बादी न हो तो लगभग 412 मिलियन टन अनाज लोगों को प्राप्त हो सकेगी।

खाद्य समस्या को दूर करने के उपायः–

भारत में खाद्य समस्या को दूर करने के लिए खाद्यान्न के उत्पादन में वृद्धि करना होगा। इसके लिए वैज्ञानिक तरीकों आधुनिक मशीनों तथा कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के साथ कृषि करनी पड़ेगी। फसलों की रक्षा करना होगा। जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण लाना होगा। आधुनिक तरीकों से खेती करने के लिए किसानों को शिक्षित करना होगा ताकि आधुनिक तकनीक वाले मशीनों का प्रयोग कर सकें। किसानों को वित्तीय सहायता जेसे– ऋण, सबिसडी आदि की व्यवस्था करनी होगी। सरकार को भी इसके लिए चाहिए कि नये–नये तकनीकों एवं खाद्यान्नों का आयात करें। खाद्यान्न की सुरक्षित भंडारण की व्यवस्था करें इसे लिए विशिष्ट संस्थाओं की स्थापना करें। किसानों को वित्तीय सहायता तथा सब्सिडी आदि की व्यवस्था करें।

भारत सरकार द्वारा इसके लिए राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 लागू किया गया जिसका उद्देश्य भारत के 1.2 बिलियन लोगों में से लगभग दो तिहाई लोगों को सब्सिडी वाला खाद्यान्न उपलब्ध कराना है। इसमें मध्यान्ह भोजन योजना, एकीकृत बाल विकास सेवा योजना तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली शामिल है।

निष्कर्षः–

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत के लिए खाद्य सुरक्षा आज भी एक चुनौती बना हुआ है। भारत को अपनी खाद्य सुरक्षा में सुधार करने के लिए बड़ी पहल करने

की आवश्यकता है जिससे भारत में कुपोषण की समस्या का समाधान हो सके, खासकर बच्चों एवं महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री उपलब्ध हो सके।

Reference

- Swaminathan , MS. Science and sustainable Food Securiy,2009
- Babu, Suresh and Prabuddha Sanyal. Food security , Poverty and Nutrion policy Analysis, 2009
- Jain, Sachin. Rastriya khadya suraksha kanoon ,2013
- Mahashweta Devi and Arun kumar Tripathi, khadya sankat ki chunauti : vani Publication,2009
- Global Food Security index,2018
- Food and Agriculture Organization Report,2018
- Economic Review, Ministry of Finance, Government of India
- www.economictimes.com
- www.hindustantimes.com
- Yojna magazine (monthly)
- Census of India (2011)